''सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन''

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) को

मास्टर ऑफ एजुकेशन

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध–प्रबंध

शोध निर्देशक

डॉ. गुंजन शर्मा

सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा विभाग)

प्रगति महाविद्यालय

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

शोधकर्ता

प्रियंका यादव

एम. एड. (प्रशिक्षार्थी)

प्रगति महाविद्यालय

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

अध्ययन केंन्द्र

प्रगति महाविद्यालय, चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

सत्र 2024–26

''सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन''

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) को

मास्टर ऑफ एजुकेशन

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध–प्रबंध

शोध निर्देशक

डॉ. गुंजन शर्मा

सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)

प्रगति महाविद्यालय

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

शोधकर्ता

प्रियंका यादव

एम. एड. (प्रशिक्षार्थी)

प्रगति महाविद्यालय

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

प्राचार्य

डॉ. सौम्या नैयर

प्रगति महाविद्यालय,

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

अध्ययन केंन्द्र

प्रगति महाविद्यालय, चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

सत्र 2024–26

घोषणा पत्र

मैं **प्रियंका यादव** प्रगति महाविद्यालय, चौबे कॉलोनी, रायपुर की एम. एड. की नियमित छात्रा घोषणा करती हूँ कि मैंनें प्रस्तुत लघु शोध **''सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन''** मेरे मैलिक प्रयासो का प्रतिफल हैं।

यह शोधकार्य मैंने शोध र्निदेशिका डॉ. गुंजन शर्मा के मार्गदर्शन मे सम्पन्न किया हैं। मेरी जानकारी एवं विश्वास के आधार पर मैंनें प्रस्तुत शोध कार्य के किसी भी भाग का समावेश बिना किसी संर्दभ के नही किया हैं ।

स्थानः— रायपुर

दिनांकः—

शोधकर्ता

प्रियंका यादव

एम. एड. (छात्रा)

प्रगति महाविद्यालय

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **प्रियंका यादव** ने प्रगति महाविद्यालय, चौबे कॉलोनी, रायपुर के संस्थागत प्रशिक्षार्थी के रूप में सत्र 2024 – 2026 में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा आयोजित ''मास्टर ऑफ एजुकेशन'' की परीक्षा की अंशपूर्ति हेतु मेरे मार्गदर्शन में प्रस्तुत लघु–शोध का कार्य संपादित किया है।

प्रस्तुत लघु शोध **''सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन''** किया गया है।

मेरे सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध प्रशिक्षार्थी का मौलिक कार्य है विषय चयन, प्रतिपादन एवं निष्कर्ष की दृष्टि से यह कार्य परिपूर्ण है एवं उसका कार्य पूर्ण हो गया है। यह लघु शोधकार्य विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समस्त नियमों का अक्षरशः पालन करते हुए किया गया है। उक्त लघु शोध प्रबंध को मूल्यांकनार्थ अग्रेषित करते हुए हर्ष अनुभव कर रही हूँ ।

स्थानः –

दिनांकः–

शोध र्निदेशिका

डॉ. गुंजन शर्मा

सहा. प्राध्यापिका शिक्षा संकाय

प्रगति महाविद्यालय

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

आभार

सर्वप्रथम मैं मां सरस्वती के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूं जिनकी असीम कृपा के बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन हेतु मुझे ईस्ट जनों से भरपूर सहयोग प्राप्त है उनके इस सहयोग हेतु तहे दिल से आभारी हूं जिनकी आत्मप्रेरणा एवं अपने ऊपर विश्वास करने की प्रेरणा दी एवं मेरे लघु शोध हेतु मेरा मार्ग प्रशस्त किया। मैं इस अवसर पर उन सभी लोगों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस कार्य को साकार करने में अपना योगदान दिया।

मैं अपने महाविद्यालय की प्रचार्या महोदया **डॉ. सौम्या नैयर,** की तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूँ। मैं अपने विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. के. एन. गजपाल** सर की भी उतनी ही आभारी हूँ, जिनका निरंतर प्रोत्साहन, विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन और समय पर मिला सहयोग इस शोध के हर चरण में अमूल्य रहा।

मैं अपने लघु शोध प्रबंध की मार्गदर्शिका **डॉ. गुंजन शर्मा** (सहा. प्राध्यापिका) का सहदय से आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करती हूं जिनके स्नेहमयी व्यवहार, सौम्या एवं शांत प्रकृति, उदार हृदय एवं विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन व पर्यवेक्षक से मैं अपना लघु शोध कार्य निश्चित समयावधि में पूर्ण कर सकी।

हमारे महाविद्यालय के शिक्षा संकाय के **कुमारी चिन्मय दास** (सहा. प्रा.), **श्री भुवनेश्वर यादव** (सहा. प्रा.) **श्रीमती उपासना श्रीवास्तव** (सहा. प्रा.), **कुमारी पूजा साहू** (सहा. प्रा.), **कुमारी स्वालेहा निशा** (सहा. प्रा.) का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपना निर्देशन व मार्गदर्शन समय—समय पर दिया।

इसके साथ ही महाविद्यालय के उन सभी प्राध्यापक को एवं कर्मचारियों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने शोधकर में मेरी मदद की ।

हमारे महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री सुनील सिंह सर का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिनमें से मुझे आवश्यक शोध सामग्री उपलब्ध हो सकी।

मेरे प्रिय पति, इस यात्रा की हर चुनौती और हर पल में मेरे साथ खड़े रहने के लिए आपका धन्यवाद। आपके प्रोत्साहन, और आपके साथ ने इस लंबी प्रक्रिया को और भी अधिक सार्थक और आनंदमय बना दिया।

मैं अपनी हर उपलब्धि का श्रेय अपने परिवार को देती हूँ, जिनका बिना शर्त प्यार, अनगिनत त्याग और निरंतर प्रार्थनाएँ इस थीसिस के हर शब्द के पीछे मेरी शक्ति का सबसे बड़ा स्रोत रही हैं। मैं उन सभी छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने इस अध्ययन में भाग लिया और अपना कीमती समय तथा विचार साझा किएय जिनके सहयोग के बिना यह शोध संभव नहीं हो पाता।

स्थानः— रायपुर

दिनांकः—

शोधकर्ता

प्रियंका यादव

एम. एड. (छात्रा.)

प्रगति **महाविद्यालय**

चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक	क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.		**अध्ययन की शैक्षिक पृष्ठभूमि**	
	1.0	प्रस्तावना	01—01
	1.1	सोशल मीडिया की भूमिका	02—02
	1.2	सोशल मीडिया का इतिहास	03—03
	1.3	छात्रों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग	03—05
	1.4	सोशल मीडिया के प्रकार	06—06
	1.5	विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव	07—07
	1.6	अध्ययन की आवश्यकता	08—08
	1.7	अध्ययन की महत्व	08—08
2.		**संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन**	
	2.0	प्रस्तावना	09—09
	2.1	पूर्व मे किए गए शोध कार्य का अध्ययन	09—09
	2.1.1	भारत में किए गए शोध कार्य का अध्ययन	09—10
	2.1.2	विदेश में किए गए शोध कार्य का अध्ययन	10—11
	2.2	शोध अंतराल	12—12
	2.3	समस्या का कथन	12—12
	2.4	अध्ययन के उद्देश्य	12—13
	2.5	अध्ययन की परिकल्पना	13—13
	2.6	अध्ययन की परिसीमन	13—13
	2.7	अध्ययन के चर	14—14
	2.8	प्रकार्यात्मक परिभाषा	14—14
3.		**अनुसंधान प्रविधि**	

	3.0	प्रस्तावना	15—15
	3.1	शोध का प्रविधि	15—15
	3.2	शोध का अर्थ	15—16
	3.3	शोध का अभिकल्प	16—16
	3.4	शोध विधि के चयन का आधार	16—16
	3.5	शोध अध्ययन की विधि	16—16
	3.6	शोध विधि का महत्व	17—17
	3.7	जनसंख्या	17—17
	3.8	न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि	17—18
	3.9	उपकरण का चयन	18—18
	3.10	उपकरण का प्रशासन	18—19
	3.11	समंक संग्रहण की कार्यविधि	19—19
	3.12	शोध मे प्रयुक्त सांख्यिकीय	19—21
4	**आंकड़ों का विश्लेषण**		
	4.0	प्रस्तावना	22—22
	4.1	सारणीयन	22—22
	4.2	सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या	23—29
	4.3	परिकल्पना का प्रमाणीकरण एवं परिणाम	30—31
5	**सारांश, परिणाम एवं सुझाव**		
	5.0	प्रस्तावना	32—32
	5.2	सारांश	32—32
	5.3	परिणाम	33—33
	5.4	निष्कर्ष	34—34
	5.5	सुझाव	34—35
	5.6	अनुकरणीय अध्ययन	36—36
	संदर्भ ग्रन्थ सूची—		
	परिशिष्ट		

सारणियो की सूची

क्रमांक	सारणी क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	3.1	शोध अध्ययन के समग्र की विवरण तालिका	17
2.	4.1	बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिकव्यवहार के मध्यमान, मानक विचलन एवं t–परीक्षण का तुलनात्मक विश्लेषण	23
3. .	4.2	महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण	25
4.	4.3	महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सामाजिक व्यवहार पर सोशल मिडिया का वर्णात्मक सांख्यकीय विश्लेषण	27
5.	4.4	महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, सोशल मीडिया के उपयोग एवं समूह के मध्य पीयरसन सह–संबंध गुणांक	27

आरेख की सूची

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
4.1	आरेख 4.1– बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के प्राप्तांकों की तालिका (लिंग आधारित वितरण)	24
4.2	बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के पर सोशल मिडिया के प्रभाव के प्राप्तांकों की तालिका (लिंग आधारित वितरण)	26
4.3	महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सामाजिक व्यवहार पर सोशल मिडिया के प्राप्तांकों की तालिका	29

अध्याय–प्रथम

अध्ययन की शैक्षिक पृष्ठभूमि

1.0 प्रस्तावना – वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन को अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया है। सोशल मीडिया जैसे –फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, ट्विटर एवं यूट्यूब ने संचार को अत्यंत सरल एवं तीव्र बना दिया है। शिक्षा किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक बहुत ही जरूरी हिस्सा है। हर किशोर के लिए, शिक्षा किसी भी दूसरी चीज से ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। आज के किशोर सोशल नेटवर्क इस्तेमाल करने में बहुत ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हैं, लेकिन बदकिस्मती से सोशल नेटवर्क शिक्षा पर बुरा असर डालते हैं। पिछली रिसर्च में यह पहले ही पता लगाया जा चुका है कि 90: से ज्यादा कॉलेज के छात्र सोशल नेटवर्क का इस्तेमाल करते हैं। टेक्नोलॉजी ने छोटे–छोटे कम्युनिकेशन डिवाइस बनाकर तेजी से विकास किया है, लेकिन इन छोटे कम्युनिकेशन डिवाइस का इस्तेमाल कभी भी, कहीं भी सोशल नेटवर्क चलाने के लिए किया जा सकता है। इन डिवाइस में पॉकेट कंप्यूटर, और लैपटॉप यहाँ तक कि साधारण मोबाइल फोन (जिनमें इंटरनेट चलता हो) वगैरह शामिल हैं। इसमें कोई शक नहीं कि टेक्नोलॉजी बेहतरी की दिशा में एक कदम है, लेकिन कोई भी ऐसी टेक्नोलॉजी जो सोशल नेटवर्क तक आसानी से पहुँच देती हो, वह सोशल नेटवर्क के आदी लोगों के लिए खतरनाक हो सकती है।

आज का युग ' सोशल मीडिया' का युग है। लोगों की जिंदगी में सोशल मीडिया एक बहुत ही जरूरी भूमिका निभाता है। सोशल मीडिया ने दुनिया भर में, और खासकर भारत में, टेक्नोलॉजी में एक जबरदस्त और तेजी से हो रही तरक्की को भी देखा है। इस अभूतपूर्व बदलाव का श्रेय इंटरनेट और सोशल मीडिया की क्रांति को जाता है, जिसकी वजह से लगभग हर चीज इतनी आसान और तुरंत होने वाली बन गई है। तुरंत बातचीत करने के लिए, एक ऐसे वैश्विक नेटवर्क के जरिए कुछ भी किया जा सकता है । जो लोगों कोएक–दूसरे से ज्यादा जुड़ा हुआ और एक–दूसरे पर निर्भर बनाता है। इस तरह, सोशल मीडिया की इस क्रांति ने लोगों को उनकी भौगोलिक सीमाओं की परवाह किए बिना एक साथ ला दिया है। ज्यादातर लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पूरी तरह से मुफ्त हैं। ये प्लेटफॉर्म इस्तेमाल करने में आसान हैं ।

1.1 सोशल मीडिया की भूमिका–

सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित वे डिजिटल मंच जिनके माध्यम से व्यक्ति संवाद, सूचना–साझाकरण एवं सामाजिक संपर्क करता है। सोशल मीडिया एक डिजिटल मुँह–जबानी प्रचार की तरह काम करता है। लोग जानकारी पाने और दूसरों से जुड़े रहने के लिए स्मार्टफोन, टैबलेट, कंप्यूटर और दूसरे इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के जरिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। अब ये लोग बस एक क्लिक की दूरी पर हैं। लगभग हर दिन सोशल मीडिया का इस्तेमाल करके, लोग अलग–अलग तरह के सोशल नेटवर्क के जरिए बातचीत करते हैं। वे जानकारी शेयर करते हैं, पोस्ट करते हैं और मीडिया से जुड़ी जानकारी से जुड़ते हैं। अपनी लोकप्रियता और इस्तेमाल में आई जबरदस्त तेजी की वजह से, सोशल मीडिया बातचीत करने का एक नया वरदान बन गया है।

कोई भी व्यक्ति लोगों के अलग–अलग समूहों के बीच अच्छे रिश्ते बनाए रखने के लिए अपने सोशल मीडिया का इस्तेमाल करता है। यह रिश्ता प्यार और पसंद जैसी भावनाओं, रोजाना की बातचीत, या किसी दूसरी तरह की सामाजिक जिम्मेदारियों पर आधारित हो सकता है। सामाजिक रिश्ते कई अलग–अलग जगहों पर बनते हैं, जैसे परिवार, दोस्त, शादी–ब्याह से जुड़े लोग, काम की जगह, और यहाँ तक कि सोशल मीडिया पर भी। सोशल मीडिया मुख्य रूप से इंटरनेट या मोबाइल फोन पर आधारित ऐसे ऐप और टूल हैं जिनके जरिए लोग आपस में जानकारी शेयर करते हैं।

सोशल मीडिया के बढ़ते इस्तेमाल का दुनिया भर के स्कूली छात्रों के सामाजिक मेलजोल, मनोरंजन और खरीदारी से जुड़े फैसलों पर बहुत गहरा असर पड़ता है। सोशल मीडिया खुद से सीखने को बढ़ावा देता है, जिससे छात्र खुद ही सवालों के जवाब ढूँढ़ने और अपने फैसले लेने के लिए तैयार होते हैं। सोशल मीडिया छात्रों को क्लास रूम के बाहर भी एक–दूसरे से जुड़ने और मिलकर काम करने का मौका देता है। इसका मतलब यह है कि दुनिया भर के छात्र, नौकरी–पेशा की दुनिया में कदम रखने से काफी पहले ही, एक–दूसरे से जुड़ी हुई इस दुनिया का अनुभव करना शुरू कर देते हैं।

1.2 सोशल मीडिया का इतिहास –

सोशल मीडिया के इतिहास का पता उस लिखित बातचीत से लगाया जा सकता है, जो चिट्ठिया एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक हाथ से पहुँचाई जाती थी। चिट्ठियों का आदान–प्रदान व्यक्तिगत रूप से होता था। फिर घोड़े पर सवार होकर संदेश पहुँचा जाता था। डाक सेवा 550 ईसा पूर्व में शुरू हुई थी और यह कई सदियों तक सामाजिक संचार के साधन के रूप में जारी रही। 1792 में ग्राहम बेल ने टेलीग्राफ का आविष्कार किया। जिससे संदेशों को लंबी दूरी तक, घोड़े पर सवार से तेजी से पहुँचाना संभव हो गया। टेलीग्राफ संदेश भी सामाजिक संचार का एक प्रभावी माध्यम थे। 1890 में टेलीफोन का भी आविष्कार हुआ, जो सामाजिक संचार का एक प्रभावी माध्यम साबित हुआ। लेकिन, 1891 में मार्कोनी द्वारा रेडियो के आविष्कार ने दुनिया भर में सोशल मीडिया और संचार के दायरे को काफी हद तक बढ़ा दिया।

वेब टेक्नोलॉजी पर आधारित सोशल नेटवर्क बनाने वाली पहली कंपनियाँ Classmates.com और SiuDegrees.com थीं। 1995 में स्थापित Classmates.com ने, वेब सर्फरों को अपनी साइट पर लाने के लिए एक जोरदार पॉप–अप विज्ञापन अभियान चलाया। इसने अपने सोशल नेटवर्क का आधार हाई–स्कूल और कॉलेज के ग्रेजुएट छात्रों, सेना की विभिन्न शाखाओं और कार्यस्थलों के सदस्यों के बीच पहले से मौजूद आपसी संबंधों को बनाया। यह पहली सच्ची सोशल नेटवर्किंग साइट थी।

1.3 छात्रों द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग –

1.3.1 LinkedIn – यह अपने करियर के लिए सहपाठियों, एम्प्लॉयर्स, कर्मचारियों और साथियों के साथ नेटवर्क बनाना शुरू करने का एक शानदार तरीका है, भले ही वे अभी कॉलेज की क्लास में ही क्यों न हों। मुफ्त में साइन अप करें और कॉन्टैक्ट्स देखना शुरू करें। लोगों से जान–पहचान बढ़ाएँ, लेकिन ऐसा तभी करें जब उन्होंने अपना प्रोफाइल पेज पूरी तरह से भर लिया हो, जिसमें उनका रिज्यूम, रेफरेंस और दूसरी जानकारी शामिल हो। वे कई अच्छे ग्रुप्स में भी शामिल हो सकते हैं ।

1.3.2 FaceBook –सोशल मीडिया ने लोगों के आपस में बातचीत करने के तरीके, कंपनियों के बिजनेस करने के तरीके और अपने विज्ञापन बजट के पैसे खर्च करने के तरीके को पूरी तरह से

बदल दिया है। 2004 में हार्वर्ड के एक हॉस्टल में Mark Zuckerberg द्वारा शुरू की गई, यह सोशल मीडिया साइट, जो बाद में Facebook बनी, शुरू में हाई स्कूल और कॉलेज के छात्रों को ध्यान में रखकर बनाई गई थी।

1.3.3 WhatsApp- WhatsApp एक मुफ्त क्रॉस–प्लेटफॉर्म मैसेजिंग सर्विस है। यह iPhone और Android स्मार्टफोन के साथ–साथ Mac और Windows PC इस्तेमाल करने वालों को दुनिया भर में मौजूद दूसरे लोगों के साथ मुफ्त में कॉल करने और टेक्स्ट, फोटो, ऑडियो और वीडियो मैसेज भेजने की सुविधा देता है, चाहे सामने वाले के पास कोई भी डिवाइस क्यों न हो। WhatsApp क्रॉस–प्लेटफॉर्म पर बातचीत करने के लिए Wi-Fi कनेक्शन का इस्तेमाल करता है। यह Apple iMessage और Google के Message ऐप से अलग है, जिन्हें काम करने के लिए सेल्यूलर नेटवर्क और Short Message Service (SMS) की जरूरत पड़ती है। WhatsApp and Wi-Fi इस्तेमाल करने का तरीका काफी किफायती है, जिसकी वजह से यह उन लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है ।

1.3.4 Twitter- Twitter एक मुफ्त सोशल मीडिया साइट है जहाँ यूजर्स छोटे पोस्ट ब्रॉडकास्ट करते हैं, जिन्हें ट्वीट्स कहा जाता है। इन ट्वीट्स में टेक्स्ट, वीडियो, फोटो या लिंक हो सकते हैं। Twitter इस्तेमाल करने के लिए, यूजर्स को इंटरनेट कनेक्शन या स्मार्टफोन की जरूरत होती है, ताकि वे ऐप या वेबसाइट Twitter.com का इस्तेमाल कर सकें।

1.3.5 Instagram- Instagram एक ऐसा जरिया है जिसके जरिए बहुत से लोग शुरुआती दौर में चीजें शेयर करते हैं इसी सोशल मीडिया में बहुत सी ऐसी पॉजिटिव चीजें भी हैं। जो हर स्टूडेंट को एक बुद्धिजीवी बना सकती हैं। लेकिन सोशल मीडिया के नेगेटिव पहलुओं ने उसके पॉजिटिव पहलुओं को दबा दिया है। Instagram उन स्मार्टफोन ऐप्स में से एक है, जिसने युवाओं की क्रिएटिव और इमेज–बेस्ड ऑनलाइन जिंदगी को अपने साथ जोड़ लिया है।

1.3.6Telegram- Telegram ऐप ऑनलाइन शिक्षकों के लिए एक बहुत ही मददगार और शक्तिशाली टूल है। आप इस ऐप का इस्तेमाल करके अपने छात्रों से बातचीत कर सकते हैं और उन्हें अपनी कोर्स सामग्री तक पहुँच दे सकते हैं। Telegram पर कई बॉट उपलब्ध हैं जिनका इस्तेमाल शेड्यूलिंग और छात्रों को याद दिलाने जैसी प्रक्रियाओं को ऑटोमेट करने के लिए किया जा सकता है, जो एक ऑनलाइन कोर्स चलाने के लिए उपयोगी है।

1.3.7 Snapchat- Snapchat का इस्तेमाल ज्यादातर छात्र कैंपस से जुड़ी ताजा घोषणाओं के बारे में जानकारी पाने के लिए करते हैं। किसी खास समय पर LuSi (Snap) भेजकर, छात्रों को अगली बड़ी घोषणा का बेसब्री से इंतजार रहता है। चाहे वह पाठ्यक्रम में बदलाव से जुड़ी जानकारी हो या किसी सालाना कार्यक्रम की सटीक तारीख, यह उत्सुकता जगाने का एक बेहतरीन तरीका है। छात्रों तक ठीक उसी तरह पहुँचकर जिस तरह वे पहुँचना चाहते हैं, Snapchat का इस्तेमाल करने वाले स्कूल, छात्रों में स्कूल के प्रति उत्साह और स्कूल की गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

1.3.8 YouTube- आप YouTube के बारे में तो जानते ही होंगे। एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के तौर पर YouTube का मूल सिद्धांत एक ही हैः वीडियो शेयरिंग। YouTube का यह मुफ्त सोशल मीडिया वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म, व्यक्तियों और व्यवसायों को अपने वीडियो अपलोड करने और उन्हें पूरी दुनिया के साथ शेयर करने की सुविधा देता है। YouTube महज सोशल मीडिया का एक हिस्सा भर नहीं है, बल्कि यह सोशल मीडिया की दुनिया का एक विशालकाय प्लेटफॉर्म है। कोई भी महत्वाकांक्षी मार्केटर इसे इसी रूप में पहचानेगा।

1.3.9 SWAYAM- SWAYAM भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक कार्यक्रम है, जिसे शिक्षा नीति के तीन मुख्य सिद्धांतों पहुँच, समानता और गुणवत्ता को हासिल करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस प्रयास का उद्देश्य बेहतरीन शिक्षण–अधिगम संसाधनों को सभी तक पहुँचाना है, जिसमें सबसे वंचित लोग भी शामिल हैं। SWAYAM उन छात्रों के लिए डिजिटल खाई को पाटने का प्रयास करता है, जो अब तक डिजिटल क्रांति से अछूते रहे हैं और ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में शामिल नहीं हो पाए हैं। SWAYAM विभिन्न विषयों पर ऑनलाइन सर्टिफिकेशन कोर्स संचालित करता है, जिनके लिए हर सेमेस्टर में कंप्यूटर–आधारित मोड या हाइब्रिड मोड और पेपर–पेन मोड में परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। यह प्रतिस्पर्धी पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक आवश्यक पहुँच और उपलब्धता सुनिश्चित करके भारत के शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाता है।

1.4. सोशल मीडिया के प्रकार – सोशल मीडिया का मतलब उन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और टेक्नोलॉजी से है जो यूजर्स को कंटेंट बनाने और शेयर करने, दूसरे यूजर्स से जुड़ने और सोशल नेटवर्किंग में हिस्सा लेने में मदद करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कई तरह के होते हैं, और हर प्लेटफॉर्म की अपनी खास खूबियाँ होती हैं –

1.4.1 सोशल नेटवर्किंग साइट्स – सोशल नेटवर्किंग साइट्स लोगों को एक–दूसरे से जुड़ने में मदद करती हैं और अलग–अलग ब्रांड्स को लोगों को अपनी ओर खींचने के कई तरीके देती हैं।

1.4.2 माइक्रो ब्लॉगिंग साइट्स– माइक्रो ब्लॉगिंग साइट्स ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं जो यूजर्स को छोटा कंटेंट शेयर करने की सुविधा देते हैं, जिसमें आम तौर पर टेक्स्ट अपडेट या फोटो शामिल होते हैं।

1.4.3 मीडिया शेयरिंग नेटवर्क– मीडिया शेयरिंग नेटवर्क ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं जो यूजर्स को फोटो, वीडियो और ऑडियो फाइलों जैसे अलग–अलग तरह के मीडिया को शेयर करने की सुविधा देते हैं।

1.4.4 चर्चा फोरम– चर्चा फोरम, जिन्हें ऑनलाइन चर्चा बोर्ड भी कहा जाता है, ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं जो यूजर्स को अलग–अलग विषयों पर ऑनलाइन चर्चाओं में हिस्सा लेने की सुविधा देते हैं। ये प्लेटफॉर्म यूजर्स को सवाल पूछने, अपनी राय शेयर करने, और उन दूसरे यूजर्स के साथ बातचीत करने के लिए एक जगह देते हैं जिनकी पसंद या अनुभव एक जैसे होते हैं।

1.4.5 ब्लॉगिंग और पब्लिशिंग नेटवर्क– ये सोशल मीडिया नेटवर्क आपको अपनी नौकरी, मौजूदा घटनाओं, शौक और अन्य विषयों पर अपने विचार प्रकाशित करने की जगह देते हैं। आप अपनी खुद की वेबसाइट पर होस्ट किए बिना भी, अपना खुद का ब्लॉग होने के कई फायदों का आनंद ले सकते हैं। आप उन लोगों के समूह से भी नए पाठकों को आकर्षित कर सकते हैं ।

1.4.6 मैसेजिंग ऐप्सः– मैसेजिंग ऐप्स ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं, जो उपयोगकर्ताओं को टेक्स्ट, वॉइस या वीडियो संदेशों के माध्यम से एक–दूसरे के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाते हैं। ये प्लेटफॉर्म आम तौर पर निजी या समूह चौट की सुविधा प्रदान करते हैं ।

1.5 विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव – सोशल मीडिया एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल कई तरह के ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और टेक्नोलॉजी को बताने के लिए किया जाता है। ये प्लेटफॉर्म यूजर्स को वर्चुअल कम्युनिटी और नेटवर्क में जानकारी और विचार बनाने, शेयर करने और आपस में बदलने की सुविधा देते हैं। सोशल मीडिया का प्रभाव अच्छा और बुरा, दोनों तरह का हो सकता है। हाल के सालों में इस पर बहुत सारी रिसर्च और बहस हुई है।

1.5.1 सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव– सोशल मीडिया का अच्छा प्रभाव सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने जिन अलग–अलग तरीकों से लोगों और समाज पर अच्छा असर डाला है, उन्हें सोशल मीडिया का अच्छा प्रभाव कहा जाता है। सोशल मीडिया की वजह से सामाजिक सक्रियता, बिजनेस, शिक्षा और आपसी जुड़ाव के नए मौके बने हैं। इसने लोगों के लिए एक–दूसरे से बातचीत करना आसान बना दिया है, चाहे वे दुनिया में कहीं भी हों। साथ ही, इसने हमें शिक्षा, रिसर्च और बिजनेस शुरू करने के लिए नए साधन दिए हैं। सोशल मीडिया के अच्छे असर से एक ज्यादा जुड़ा हुआ और जानकार समाज बना है, और कुल मिलाकर इसका असर बहुत बड़ा रहा है। सोशल मीडिया का समाज पर कई तरह से अच्छा असर पड़ा है। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैंः जुड़ाव सोशल मीडिया ने लोगों के लिए एक–दूसरे से जुड़ना आसान बना दिया है, चाहे वे दुनिया के किसी भी हिस्से में रहते हों।

1.5.2 सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव – ''सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव'' शब्द उन अलग–अलग बुरे असर को बताता है जो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने लोगों और समाज पर डाले हैं। साइबर बुलिंग, लत, प्राइवेसी और सुरक्षा को लेकर चिंताएँ, गलत जानकारी का फैलना, और मानसिक स्वास्थ्य तथा आत्म–सम्मान पर बुरा असरकृये कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जिन्हें सोशल मीडिया ने और बढ़ा दिया है। सोशल मीडिया का समाज पर भी कुछ बुरा असर पड़ा है। साइबर बुलिंगः सोशल मीडिया ने लोगों के लिए साइबर बुलिंग, उत्पीड़न और ऑनलाइन दुर्व्यवहार के दूसरे तरीकों में शामिल होना आसान बना दिया है। इसका लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है। जैसे– लत और भटकाव, प्राइवेसी और सुरक्षा, गलत जानकारी का फैलना, सामाजिक तुलना और आत्म–सम्मान

1.6 अध्ययन की आवश्यकता– सोशल मीडिया टूल्स ने संचार के तरीकों में क्रांति ला दी है, चाहे वह निजी तौर पर हो या, तेजी से, या काम की जगह पर। सोशल मीडिया के माध्यम से संचार में एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या वेबसाइट का उपयोग शामिल होता है, जो लोगों को विभिन्न सेवाओं के माध्यम से, आमतौर पर किसी सामाजिक उद्देश्य के लिए, आपस में बातचीत करने में सक्षम बनाता है। इनमें से अधिकांश सेवाएं वेब–आधारित होती हैं और लोगों को इंटरनेट पर एक–दूसरे से जुड़ने के अवसर प्रदान करती हैं,। शिक्षा के क्षेत्र में इन साइटों को विकसित करने के लिए सोशल मीडिया पर अपने विचार और सुझाव साझा करें। यह सोशल मीडिया का एक और बड़ा महत्व है। आप इन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर दूसरों से सीख भी सकते हैं और अपनी राय भी साझा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप आज कुछ खरीदना चाहते हैं, तो आप आसानी से ग्राहकों की रेटिंग और समीक्षाएं देख सकते हैं। इसलिए, ये समीक्षाएं आपके निर्णयों को अधिक ठोस बनाती हैं।

1.7 अध्ययन का महत्व– किसी भी शोध कार्य के लिए समस्या का चयन महत्वपर्णू स्थान रखता है। किसी भी कार्य को करने के पीछे कोई न कोई कारण होता है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया सबसे अधिक प्रचलित व सशक्त माध्यम है। सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। सोशल मीडिया के विकास के साथ–साथ समाज में परिवर्तन हो रहा है विशेषकर विद्यार्थी वर्ग पर इसका अमिट प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से दृष्टव्य हुआ है। वर्तमान में सोशल मीडिया के साधन प्रत्येक घर में उपलब्ध है। जिससे इन साधनों का प्रभाव जीवन के हर पक्ष (यथा सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक इत्यादि) पर दिखाई देता है। इसके माध्यम से जहाँ हमें नवीन जानकारियों का पता लगता है, वहीं दूसरी तरफ नयी परम्पराएँ (सांस्कृतिक तथा सामाजिक) तथा अनेकानेक नवीन समस्याओं का भी प्रादुर्भाव हुआ है। साथ ही हमारे मूल्यों (सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक) का भी ह्यस दिखाई देता है। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी अपने ज्ञान में तो वृद्धि कर रहे हैं परंतु कुछ अनेक अपराधिक कार्यों में लिप्त होते जा रहे हैं। अतः विद्यार्थियों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। इसलिए इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया गया हैं।

अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

2.0 प्रस्तावना – मनुष्य इस दुनिया की सर्वश्रष्ठ एवं अनुपम रचना है। विश्व के विकास में मनुष्य के मस्तिष्क का महत्वपूर्ण योगदान है। मनुष्य की इस अभूतपूर्व सफलता का रहस्य मनुष्य द्वारा अतीत के अनुभवों से सीख लेकर उनको आधार बना कर विकास के नए आयाम तय करना है। शिक्षा के क्षेत्र में भी यह बात लागू होती है। पूर्व में निर्धारित किये गए तथ्यों के आधार पर ही नवीन अनुसंधान होते है। अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता सम्बंधित साहित्य का अध्ययन पूर्व से संचित व लिखित ज्ञान के आधार पर ही भावी शोध करता है। इसलिए सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना अनुसंधान का महत्वपूर्ण चरण है। अनुसंधान को करने से पहले अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या का चयन, परिकल्पना का निर्माण तथा अध्ययन की रुपरेखा का निर्माण करना पड़ता है। इन्ही तथ्यों के आधार पर शोधकर्ता आपने शोध कार्य को आगे बढ़ाता है। अनुसन्धान की प्रक्रिया में सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण है। किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान करने के लिए उससे सम्बंधित साहित्य का अध्ययन अत्यावश्यक है। सम्बंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधकार्य संभव नहीं। इस प्रकार किसी भी शोधकर्ता को अनुसंधान योजना के लिए उससे सम्बंधित साहित्य का अध्ययन बहुत आवश्यक है। सम्बंधित साहित्य का अवलोकन शोधकर्ता को शोध के लिए उस क्षेत्र से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करने में सहायता करता है।

2.1 पूर्व में किए गए शोध कार्य का अध्ययन

2.1.1 भारत में किए गए शोध कार्य का अध्ययन –

1.कंबोज गौरव, कौर सुश्री तरनजीत, सुश्री गुंजन (2025) कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया का प्रभावः विशेष संदर्भ में हरियाणा के यमुना नगर जिले के छात्र, शोध का उद्देश्य था कि छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया के प्रभाव की पहचान करना। इस शोध के अनुसार, अधिकांश छात्रों ने इस बात पर सहमति जताई कि सोशल मीडिया पढ़ाई में उपयोगी है, क्योंकि यह बिना किसी देरी के, केवल एक क्लिक पर अधिकांश जानकारी उपलब्ध करा देता है। सोशल

मीडिया का पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह कई तरह की जानकारी, पहले से किए गए शोधों और आने वाली तकनीकों के बारे में जानने में सहायक है ।

2. पंत डॉ ऋतुराज (2025) ''कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभाव का अध्ययन' शोध का उद्देश्य था कि कॉलेज के छात्रों के बीच सोशल मीडिया के उपयोग के पैटर्न का विश्लेषण करना। एवं छात्रों के बीच सोशल मीडिया के उपयोग के प्रभाव की जांच करना। शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सोशल मीडिया का उपयोग कॉलेज के छात्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, जो शैक्षणिक व्यवधान और शैक्षणिक लाभ की दोहरी प्रकृति प्रस्तुत करता है।

4.गायत्री एम. (2023) छात्रों के बीच सोशल मीडिया के प्रभाव पर एक अध्ययन शोध का उद्देश्य था कि छात्रों से सोशल मीडिया को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना। छात्रों के बीच सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग और प्रभाव का विश्लेषण करना विद्यार्थियों को सोशल मीडिया में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना। हाल ही में हुई एक रिसर्च में यह निष्कर्ष निकला है कि सोशल मीडिया की लत वाले छात्रों की बातचीत करने की क्षमता कम हो जाती है। छात्र जितना जयादा समय अपने मोबाइल फोन पर सोशल मीडिया से चिपके रहते हैं, उतना ही कम समय वे लोगों से आमने–सामने मिलने और उनके साथ घुलने–मिलने में बिताते हैं।

5. दलिया गोराई (2022) ''सरायकेला–खरसावां जिले में कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया का प्रभाव'' शोध का उद्देश्य था कि कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया के प्रभाव को जानना एवं सोशल मीडिया पर छात्रों की निर्भरता के स्तर और उन पर इसके प्रभाव की जांच करना । यह शोध कॉलेज के छात्रों पर किया गया। सरायकेला–खरसावां जिले में सोशल मीडिया के व्यवहार और व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा । छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का पता लगाएं। शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सोशल मीडिया ने अधिकांश छात्रों को सकारात्मक तरीके से प्रभावित किया है। इसका छात्रों पर भी कई गलत प्रभाव पड़ रहा है।

2.1.2 विदेश में किए गए शोधकर का अध्ययन –

1. वांग क्यू. एट अल (2011) कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया के प्रभाव की जांच की गई। यह वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक अनुसंधान है । इस शोध का उद्देश्य यह देखना है कि सोशल मीडिया कॉलेज के छात्रों को कैसे प्रभावित करता है। इस अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश

कॉलेज छात्र सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, और सोशल मीडिया साइटों पर कई घंटे बिताते हैं। एक कॉलेज और विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग नकारात्मक हैं।

2. डी एंड्रयू एट अल (2011) छात्रों को कॉलेज में समायोजित करने में सहायता के लिए सोशल मीडिया के उपयोग का विश्लेषण किया गया। छात्रों के कॉलेज में सुचारु परिवर्तन में सामाजिक समर्थन को बढ़ा–चढ़ाकर नहीं बताया जा सकता। अन्य महत्वपूर्ण कारकों को नियंत्रित करने के बाद भी, साइट के उपयोग ने कॉलेज के पहले सेमेस्टर के दौरान एक विविध सामाजिक सहायता नेटवर्क होने के बारे में छात्रों की धारणा को मंत्रमुग्ध कर दिया।

3. यिंग्जिया काओ और पॉल होंग (2011) शिक्षण में कॉलेज संकाय द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग के लिए आगे की जांच की आवश्यकता है। इस अध्ययन का लक्ष्य कॉलेज प्रोफेसर द्वारा अपनी कक्षाओं में सोशल मीडिया का उपयोग करने के कारणों और प्रभावों पर गौर करना है। अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, शिक्षण में सोशल मीडिया के उपयोग के चार पूर्ववृत्त हैंः संकाय व्यक्तिगत सोशल मीडिया, सहकर्मी दबाव, पर्यवेक्षक दबाव और छात्र दबाव।

4. जेना मास्ट्रोडिकासा और पॉल मेटेलर्स (2013) कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोधकर्ता छात्रों के कल्याण पर अनुभवजन्य और प्रारंभिक निष्कर्षों के प्रभाव की जांच शुरू कर दी है और सुझाव दिया है कि और अधिक शोध की आवश्यकता है। उन्होंने पाया कि सोशल मीडिया कोई समस्या नहीं है। मुद्दा सोशल मीडिया गतिविधि का सटीक उपयोग और उद्देश्य है।

5. गिल्बर्ट एम. टालग्यू एट अल (2018) चुने गए कॉलेज के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया का प्रभाव था की जाँच की। इस अध्ययन के लेखक युवाओं के नियमित सोशल मीडिया इंटरैक्शन के वास्तविक विश्व प्रभाव पर जोर देते हैं। अच्छा पाने के लिए समस्या का चित्र, एक वर्णनात्मक अध्ययन डिजाइन का उपयोग किया गया था। यह शोध 60 सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं पर आधारित था। के अनुसार इस अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, सोशल मीडिया का उपलब्धियों पर दोहरा प्रभाव पड़ता है पर जिम्मेदारियों के साथ. और किशोरों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग को संबोधित करना महत्वपूर्ण है।

2.2 शोध अंतराल –इस शोध विषय के लिए शोध अंतराल तकनीकी और मीडिया प्रारूप के स्तर पर भी साहित्यों में एक बड़ा अंतराल है। पूर्व के अधिकांश शोध फेसबुक या पारंपरिक टेक्स्ट मैसेजिंग के दौर के हैं, जबकि आज का युवा वर्ग इंस्टाग्राम रील्स, यूट्यूब शॉर्ट्स और स्नैपचौट जैसे अत्यधिक तीव्र और विजुअल शॉर्ट–वीडियो फॉर्मेट्स का आदी हो चुका है। इसके साथ ही, कोविड–19 महामारी के बाद जब विद्यार्थी डिजिटल निर्भरता अधिक हुई है। महामारी के बाद के इस बदले हुए व्यवहारिक परिदृश्य पर केंद्रित शोध साहित्यों की अत्यधिक कमी है। अधिकांश शोध केवल मात्रात्मक आंकड़ों तक सीमित हैं, जो यह तो बताते हैं कि कितने प्रतिशत छात्र कितने घंटे स्क्रीन पर बिताते हैं, लेकिन वे छात्रों के व्यवहार के पीछे के गुणात्मक कारणों जैसे–सहानुभूति में कमी, अकेलेपन का विरोधाभास। अंततः शोध सोशल मीडिया को केवल एक लत या नकारात्मक कारक के रूप में ही चित्रित करते हैं, जबकि इसके माध्यम से विकसित हो रहे सकारात्मक सामाजिक कौशल, जैसे डिजिटल नेटवर्किंग, करियर निर्माण और सामाजिक जागरूकता के संतुलित आयामों पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य इन्हीं सभी अनछुए पहलुओं और अंतरालों को भरने का प्रयास करता है।

2.3 **समस्या का कथन–** किसी भी समस्या का चयन तथा उसका परिणाम विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जाता है। इस प्रकार किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से उसके व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार को जानना अत्यंत आवश्यक है। इन्ही कारको के कारण शोध समस्या के चयन के अंतर्गत सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन कर उसको जानने का प्रयास किया गया है।

"सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन "

2.4 अध्ययन का उदेद्श्य– प्रत्येक शोध कार्य को करने के कुछ न कुछ उद्देश्य होते है। इसी प्रकार इस शोध कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित है।

- महाविद्यालयीन बालक–बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
- महाविद्यालयीन बालक–बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मिडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

- महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल मिडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.5 अध्ययन की परिकल्पना– प्रत्येक शोध कार्य को करने के कुछ न कुछ परिकल्पना होते है। इसी प्रकार इस शोध कार्य के परिकल्पना निम्नलिखित है।

- महाविद्यालयीन बालक–बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
- महाविद्यालयीन बालक–बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मिडिया के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
- महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल मिडिया का प्रभाव पाया जायेगा।

2.6 अध्ययन का परिसीमन –

- यह शोध छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले में 2 महाविद्यालय मे किए गए है। शोध के निष्कर्ष अन्य भौगोलिक क्षेत्रो में सामान्यीकरण संभवतः जटिल हो सकता है।
- शोधार्थी द्वारा यह शोध रायपुर जिले के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों के लिए किया गया है जो अन्य जिले व महाविद्यालयों के लिए प्रभावित हो सकता है।
- इस शोध के लिए आकड़ो का संग्रहण वर्ष 2024–26 के बीच किया गया है जो अन्य वर्षो के लिए प्रभावित होगा।
- यह शोध 200 प्रशिक्षार्थियों के ऊपर किया गया है, संख्या में परिवर्तित करने पर भिन्नता परिलक्षित हो सकता है।
- यह शोध 18–25 वर्ष की आयु सीमा वाले विद्यार्थियों पर किया गया है जो अन्य आयु सीमा वाले विद्यार्थियों पर करने से परिणामो में अंतर पाया जा सकता है।
- सैंपल की संख्या भी कम थे। यह महज एक लघु शोध है और इस रिसर्च में लगा समय भी ज्यादा नहीं था। इतने कम समय में कोई गहरी आम राय बनाना मुश्किल है।

2.7 अध्ययन का चर – किसी भी शोध अध्ययन में चर का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। चर वह है जिसका मान बदलता रहता है या चर को दूसरे शब्दों में परिभाषित करे तो वह वस्तु, घटना या चीज जिनके गुणों को मापा जा सकता है।।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न चरो को सम्मिलित किया गया है।

- **स्वतंत्र चर**– सोशल मीडिया का उपयोग
- **आश्रित चर**– सामाजिक व्यवहार

2.8 प्रकार्यात्मक परिभाषा–

2.8.1 सामाजिक व्यवहार से आशय– सामाजिक व्यवहार से आशय व्यक्ति की सामाजिक परिस्थितियों में प्रदर्शित व्यवहार, सहयोग, संप्रेषण, सहानुभूति एवं सहभागिता से है। वह व्यवहार जो व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों में दूसरों के साथ अंतःक्रिया के दौरान प्रदर्शित करता है।

2.8.2 महाविद्यालयीन विद्यार्थी– वे विद्यार्थी जो किसी महाविद्यालय में स्नातक कक्षा में अध्ययनरत हों। ''महाविद्यालय छात्र'' शब्द का अर्थ ऐसे व्यक्ति से है, जो उच्च शिक्षा संस्थान में पढ़ने वाला पूर्णकालिक या अंशकालिक छात्र है। महाविद्यालयीन विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो किसी खास कोर्स के लिए किसी यूनिवर्सिटी या कॉलेज में दाखिला लेता है।

2.8.3 सोशल मीडिया –सोशल मीडिया इंटरनेट पर आधारित एक ऐसा आभासी मंच है, जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री बनाने, उसे साझा करने और एक वैश्विक नेटवर्क के माध्यम से आपस में संवाद करने की अनुमति देता है। सरल शब्दों में, यह कंप्यूटर, स्मार्टफोन और इंटरनेट के माध्यम से चलने वाली एक ऐसी तकनीक है, जिसके द्वारा लोग विचारों, सूचनाओं, तस्वीरों और वीडियो का आदान–प्रदान करते हैं और सामाजिक रूप से एक–दूसरे से जुड़े रहते हैं।

अध्याय– तृतीय

अनुसंधान प्रविधि

3.0 प्रस्तावना – अनुसंधान विधियाँ वे रणनीतियाँ, प्रक्रियाएँ या तकनीकें हैं जिनका उपयोग डेटा या साक्ष्य इकट्ठा करने और उनका विश्लेषण करने के लिए किया जाता है, ताकि नई जानकारी सामने लाई जा सके या किसी विषय की बेहतर समझ विकसित की जा सके। अनुसंधान विधियाँ कई प्रकार की होती हैं, जिनमें डेटा इकट्ठा करने के लिए अलग–अलग उपकरणों का इस्तेमाल किया जाता है।

3.1 शोध का प्रविधि – प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति पूर्णतः विवरणात्मक (Descriptive) है, जिसके अंतर्गत सोशल मीडिया के उपयोग और महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के मध्य संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। इस शोध के लिए मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित सर्वेक्षण पद्धति (Survey Method) का प्रयोग किया गया है। शोध को अधिक प्रामाणिक, उद्देश्यपूर्ण और केंद्रित बनाने के लिए डेटा संकलन (Data Collection) के एकमात्र प्राथमिक स्रोत के रूप में एक स्वनिर्मित और संरचित प्रश्नावली (Self-structured Questionnaire) का निर्माण किया गया है।

शोध के अंतर्गत अध्ययन की समष्टि या जनसंख्या (Population) के रूप में निर्धारित क्षेत्र या विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालयीन विद्यार्थियों स्तर को सम्मिलित किया गया है। इस विस्तृत जनसंख्या में से न्यादर्श या सैंपल (Sample) का चयन करने के लिए 'यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति' (Random Sampling) का उपयोग किया गया है। शोध की व्यावहारिक सीमाओं को ध्यान में रखते हुए कुल विद्यार्थियों का एक निश्चित और प्रतिनिधि सैंपल 200 विद्यार्थी को चुना गया है। इस सैंपल में छात्र और छात्राओं दोनों की भागीदारी सुनिश्चित की गई है ताकि लिंग–आधारित व्यवहारिक अंतर का निष्पक्ष अध्ययन किया जा सके और स्वनिर्मित प्रश्नावली के परिणाम किसी एक वर्ग की ओर झुके हुए न हों।

3.2 शोध का अर्थ – अनुसंधान को वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके किसी विशेष चिंता या समस्या से संबंधित अध्ययन पर सावधानीपूर्वक विचार करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। अमेरिकी समाजशास्त्री अर्ल रॉबर्ट बैबी के अनुसार, ''अनुसंधान एक व्यवस्थित

जाँच है, जिसका उद्देश्य देखे गए घटनाक्रमों का वर्णन करना, उनकी व्याख्या करना, उनके बारे में भविष्यवाणी करना और उन्हें नियंत्रित करना होता है। इसमें आगमनात्मक और निगमनात्मक दोनों ही विधियाँ शामिल होती हैं।''

3.3 शोध का अभिकल्प – प्रस्तुत शोध कार्य के लिए 'वर्णनात्मक एवं कारणात्मक–तुलनात्मक शोध अभिकल्प' का चयन किया गया है। यह अभिकल्प महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सोशल मीडिया उपयोग (स्वतंत्र चर) और उनके सामाजिक व्यवहार (आश्रित चर) के बीच के वर्तमान संबंधों और प्रभावों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए पूरी तरह उपयुक्त है। इस अभिकल्प का मुख्य उद्देश्य किसी भी स्थिति में फेरबदल किए बिना, वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया के कारण छात्रों के व्यावहारिक और सामाजिक जीवन में आ रहे बदलावों को उसी रूप में चित्रित करना है जिस रूप में वे समाज में घटित हो रहे हैं। इस शोध अभिकल्प की रूपरेखा पूरी तरह से प्राथमिक आंकड़ों पर टिकी हुई है, जिसका संकलन करने के लिए 'स्वनिर्मित संरचित प्रश्नावली सर्वेक्षण' को मुख्य विधिक उपकरण बनाया गया है।

3.4 शोध विधि के चयन का आधार– सर्वेक्षण विधि के मूल तत्व को इस प्रकार समझाया जा सकता है । व्यावसायिक अध्ययनों के संदर्भ में, प्राथमिक डेटा इकट्ठा करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है। सर्वेक्षण विधि का उपयोग मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों ही प्रकार के अध्ययनों में किया जा सकता है।

3.5 शोध अध्ययन की विधि– प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्यों को प्राप्त करने और आंकड़ों के सटीक संकलन के लिए मुख्य रूप से 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। यह विधि महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सोशल मीडिया उपयोग की आदतों और उनके सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों की वर्तमान स्थिति का हूबहू मूल्यांकन करने के लिए सबसे उपयुक्त है। इस शोध विधि के अंतर्गत आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु एकमात्र प्राथमिक उपकरण के रूप में 'स्वनिर्मित संरचित प्रश्नावली' को अपनाया गया है। यह संपूर्ण प्रक्रिया पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ और प्रत्यक्ष साक्ष्यों पर आधारित है, जिसमें विद्यार्थियों के व्यावहारिक अनुभवों को सीधे उन्हीं के माध्यम से दर्ज किया गया है।

3.6 शोध विधि का महत्व – एक अनुसंधान पद्धति अनुसंधान को वैधता प्रदान करती है और वैज्ञानिक रूप से ठोस निष्कर्ष देती है। यह एक विस्तृत योजना भी प्रदान करती है जो शोधकर्ताओं को सही रास्ते पर रखने में मदद करती है, जिससे प्रक्रिया सुचारू, प्रभावी और प्रबंधनीय बन जाती है। अनुसंधान पद्धति यह समझाने का एक तरीका है कि एक शोधकर्ता अपना अनुसंधान कैसे करना चाहता है। यह किसी अनुसंधान समस्या को हल करने के लिए एक तार्किक, व्यवस्थित योजना है। एक पद्धति शोधकर्ता के अनुसंधान के दृष्टिकोण का विवरण देती है ताकि विश्वसनीय, वैध परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें जो उनके लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करते हों।

3.7 जनसंख्या – एक अनुसंधान अध्ययन में प्रतिभागियों को सामूहिक रूप से 'जनसंख्या' के रूप में संदर्भित किया जाता है। यदि प्रतिभागियों को यादृच्छिक रूप से (randomly) चुना जाता है, तो अध्ययन के परिणामों को एक बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधि माना जा सकता है। प्रगति कॉलेज – 100 विद्यार्थी एवं विप्र कॉलेज– 100 विद्यार्थी

तालिका कमांक –3.1
शोध अध्ययन के समग्र की विवरण तालिका

जनसँख्या	महिला	पुरुष
प्रगति कॉलेज	50	50
विप्र कॉलेज	50	50
कुल	100	100

3.8 न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि– अनुसंधान की भाषा में, एक नमूना लोगों, वस्तुओं या मदों का एक समूह होता है जिसे मापन के उद्देश्य से एक बड़ी जनसंख्या से लिया जाता है। नमूना जनसंख्या का प्रतिनिधि होना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हम अनुसंधान नमूने से प्राप्त निष्कर्षों को पूरी जनसंख्या पर लागू (सामान्यीकृत) कर सकें। एक नमूने को डेटा के एक छोटे समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे एक शोधकर्ता एक पूर्व–निर्धारित चयन

पद्धति का उपयोग करके एक बड़ी जनसंख्या से चुनता है। इन तत्वों को 'सैंपल पॉइंट्स, 'सैंपलिंग यूनिट्स' या 'अवलोकन' के रूप में जाना जाता है। सैंपल तैयार करना अनुसंधान करने का एक कुशल तरीका है। ज्यादातर मामलों में, पूरी आबादी पर अनुसंधान करना असंभव होता है, या फिर यह बहुत महंगा और समय लेने वाला काम होता है। प्रस्तुत अध्ययन में, रायपुर जिले के निजी महाविद्यालय प्रगति कॉलेज– 100 विद्यार्थी एवं विप्र कॉलेज– 100 विद्यार्थी का चयन 'सरल यादृच्छिक' (Simple Random) विधि की सहायता से किया गया है।

3.9 उपकरण का चयन – डेटा इकट्ठा करने और उसका विश्लेषण करने के लिए कई अलग–अलग तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है। ज्यादातर तरीके बुनियादी उपकरणों के एक मुख्य समूह पर आधारित होते हैं। इनमें इंटरव्यू, फोकस ग्रुप चर्चा, अवलोकन, फोटोग्राफी, वीडियो, सर्वेक्षण, प्रश्नावली और केस स्टडी शामिल हैं। 'रिसर्च इंस्ट्रूमेंट' (अनुसंधान उपकरण) एक ऐसा उपकरण है जिसका इस्तेमाल किसी शोधकर्ता की अनुसंधान रुचियों से संबंधित डेटा को इकट्ठा करने, मापने और उसका विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। इस अध्ययन में, डेटा इकट्ठा करने के लिए चुने गए चरों पर, विषय विशेषज्ञों की मदद से शोधकर्ता द्वारा एक स्वयं–निर्मित प्रश्नावली तैयार की जाएगी।

3.10 उपकरण का प्रशासन (Administration of the Questionnaire) – यह प्रश्नावली महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। शोधकर्ता इसे लागू करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें।

- **विधि (Mode):–** इस प्रश्नावली का प्रशासन ऑनलाइन ळववहसम थ्वतउे द्वारा व्यक्तिगत रूप में किया जाता है।
- **वातावरण** (Environment):– प्रशासन के समय शांत और आरामदायक वातावरण सुनिश्चित किया गया ताकि विद्यार्थी बिना किसी दबाव के सोच–समझकर उत्तर दे सकें।
- **समय सीमा** (Time Limit):– इस प्रश्नावली को पूरा करने के लिए कोई निश्चित समय सीमा नहीं है, लेकिन सामान्यतः विद्यार्थी इसे 10 से 15 मिनट में पूरा कर लेवे हैं।
- **प्रक्रिया** (Procedure): –सर्वप्रथम शोधकर्ता विद्यार्थियों से सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करेगा। उन्हें शोध के उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बताया जाएगा। विद्यार्थियों को आश्वस्त करें कि उनके

उत्तर पूरी तरह गुप्त रखे जाएंगे और इसका उपयोग केवल शैक्षणिक या शोध कार्य के लिए होगा। और उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया जाएगा।

3.11 समंक संग्रहण की कार्यविधि– डेटा इकट्ठा करने को अनुसंधान के लिए मानक, मान्य तकनीकों का उपयोग करके सटीक जानकारी इकट्ठा करने, मापने और उसका विश्लेषण करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। एक शोधकर्ता इकट्ठा किए गए डेटा के आधार पर अपनी परिकल्पना का मूल्यांकन कर सकता है। डेटा प्राथमिक और साथ ही माध्यमिक स्रोतों से एकत्र किया गया था। प्राथमिक डेटा एक सुव्यवस्थित प्रश्नावली की मदद से एकत्र किया गया था। यह अध्ययन रायपुर जिले के प्रगति कॉलेज, विप्र कॉलेज कॉलेज के छात्रों पर सोशल मीडिया के प्रभाव की जांच करने के लिए मिश्रित–पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करता है। माध्यमिक डेटा पिछले अध्ययनों, इंटरनेट, विभिन्न पुस्तकालयों आदि से एकत्र किया गया था। एक प्रश्नावली तैयार की गई थी और 200 छात्रों के नमूना आकार से डेटा एकत्र किया गया था। इस शोध विषय ''सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन'' मे शोध प्राविधि (Research Methodology) के रूप मे ''सर्वेक्षण विधि'' (Survey Method)'' उपयुक्त है, जो कि ''वर्णनात्मक शोध (Descriptive Research)'' के अंतर्गत आती है। चूंकि हम विद्यार्थियों के वर्तमान व्यवहार और उनकी आदतों का अध्ययन कर रहे हैं, इसलिए तथ्यों को उसी रूप में एकत्रित किया जा गया हैं। अतः प्रस्तुत शोध मे स्वयं–निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया हैं।

4.2 शोध मे प्रयुक्त सांख्यिकीय – डेटा विश्लेषण शिक्षकों को अपने छात्रों की सीखने की क्षमताओं और चुनौतियों को समझने में मदद करता है, और एक ऐसी गहरी सांस्कृतिक प्रक्रिया को बढ़ावा देता है जो सर्वोत्तम परिणाम सुनिश्चित करने के लिए विस्तृत इनपुट (जानकारी) का उपयोग करती है। केवल सांख्यिकीय के माध्यम से ही शोधकर्ता अपने निष्कर्षों में निहित संबंधों और प्रक्रियाओं को उजागर कर सकता है। निस्संदेह, व्याख्या एक यांत्रिक प्रक्रिया है। इसके लिए डेटा संग्रह की सभी सीमाओं के आलोक में, अपने स्वयं के विश्लेषण की गहन जांच की आवश्यकता होती है। यह शोध प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है।

वर्तमान अध्ययन में, ''सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन'' से संबंधित है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मध्यमान, प्रमाप

विचलन, टी–परीक्षण और सह–संबंध आदि सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है और उनके आधार पर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

4.2.1 मध्यमान –रमन बिहारी लाल के अनुसार – मध्यमान किसी समूह के प्राप्तांक का औसत मान होता है। जिसमे दोनों ओर के प्राप्तांको का विचलन समान होता है।

$$\text{मध्यमान } M = \frac{\Sigma X}{N}$$

M = मध्यमान

N= प्राप्तांको की कुल संख्या

Σ X = कुल प्राप्तांक

4.2.2 मानक विचलन – डॉ. राजेंद्र जोशी के अनुसार – किसी समूह के मध्यमान से प्राप्तांको के विचलनों के वर्ग के औसत के वर्गमूल को मानक विचलन कहते है।

$$\text{मानक विचलन } S.D. = \left(\frac{\Sigma x^2}{N} - \frac{\Sigma x^2}{N}\right)$$

Σx = प्राप्तांको का योग

N = प्राप्तांको की संख्या

4.2.3 सह–संबंध– सह–संबंध सांख्यिकी का एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो दो या दो से अधिक चरों के बीच के संबंध को मापता है। अतः जब दो चरों में इस प्रकार का संबंध हो कि एक चर के मूल्य में परिवर्तन (वृद्धि या कमी) होने पर दूसरे चर के मूल्य में भी परिवर्तन होता है, तो उसे सह–संबंध कहते हैं।

$$\textbf{सह–संबंध } r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 . \Sigma y^2}}$$

r = सह–संबंध गुणांक

x = प्रथम चर (X) का उसके मध्यमान से विचलन ($X-M_x$)

y = द्वितीय चर (Y) का उसके मध्यमान से विचलन ($Y-M_y$)

Σxy = x और y के गुणनफलों का कुल योग

Σx^2 = x के वर्गों का कुल योग

Σy^2 = y के वर्गों का कुल योग

4.2.4 टी परीक्षण – T-test दो माध्यों (mean) के बीच के अंतर को निर्धारित करने का अंतिम सांख्यिकीय माप है। ये माध्य आपस में संबंधित हो भी सकते हैं और नहीं भी। इस परीक्षण में, दोनों श्रेणियों या समूहों से यादृच्छिक रूप से चुने गए नमूनों का उपयोग किया जाता है। यह एक सांख्यिकीय विधि है, जिसमें नमूने यादृच्छिक ढंग से चुने जाते हैं, और इसमें कोई पूर्ण सामान्य वितरण नहीं होता है। जिसमें नमूनों का चयन यादृच्छिक रूप से किया जाता है। और इसमें कोई पूर्ण सामान्य वितरण नहीं होता है।

$$\mathbf{t} = \frac{\mathbf{M_1 - M_2}}{\sqrt{(\mathbf{SD_1/N_1})^2 - (\mathbf{SD_2/N_2})^2}}$$

$\mathbf{M_1}$= प्रथम समूह का मध्यमान

$\mathbf{M_2}$ = द्वितीय समूह का मध्यमान

$\mathbf{SD_1}$ = प्रथम समूह का मानक विचलन

$\mathbf{SD_2}$ = द्वितीय समूह का मानक विचलन

$\mathbf{N_1}$ = द्वितीय समूह के बालको की कुल संख्या

$\mathbf{N_2}$ = प्रथम समूह के बालको की कुल संख्या

अध्याय –चतुर्थ

आंकड़ों का विश्लेषण

4.0 प्रस्तावना – शिक्षा के क्षेत्र में मापन अचानक से अस्तित्व में नहीं आया। किसी भी शोध जांच को शुरू करने का तार्किक तरीका यह है कि एक परिकल्पना से शुरुआत की जाए, ताकि डेटा का एक उपयुक्त नमूना प्राप्त किया जा सके और उस परिकल्पना के निहितार्थों का परीक्षण किया जा सके। कोई भी अध्ययन उस डेटा से बेहतर नहीं हो सकता जिस पर वह आधारित है। और उस डेटा की जो व्याख्या की जाती है, वह काफी हद तक पहले से स्थापित निष्कर्षों के प्रकाश में की गई व्याख्या और निष्कर्षों पर ही निर्भर करती है। शोध–प्रबंध का यह अध्याय सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव से संबंधित परिणामों, उनकी व्याख्या और उन पर की गई चर्चा पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत, मौजूदा जटिल कारकों को सरल भागों में विभाजित किया जाता है, और फिर व्याख्या के उद्देश्य से उन सरल भागों को एक साथ जोड़कर एक नई व सरल व्यवस्था में प्रस्तुत किया जाता है। प्राप्त डेटा पर सांख्यिकीय प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं। जिनमें मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी–परीक्षण और सह–संबंध आदि शामिल हैं। ताकि अध्ययन के परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

4.1 सारणीयन – सारणीयन से तात्पर्य आंकड़ों को पंक्तियों और स्तंभों में व्यवस्थित तथा तार्किक रूप से प्रस्तुत करने से है, ताकि उनकी तुलना करना और उनका सांख्यिकीय विश्लेषण करना सुगम हो सके। यह संबंधित जानकारियों को एक–दूसरे के निकट लाकर तुलना करने की प्रक्रिया को सरल बनाता है, और साथ ही सांख्यिकीय शोध तथा व्याख्या के कार्यों में भी सहायक सिद्ध होता है। एक बार सत्यापित और वर्गीकृत हो जाने के पश्चात सांख्यिकीय सामग्री को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार, वर्गीकरण की प्रक्रिया ही सारणीयन का मुख्य आधार है। जिस प्रकार का वर्गीकरण किया जाता है, ठीक उसी प्रकार का सारणीयन भी संपन्न होता है। सारणीयन के लाभ –

- आंकड़ों का जो विशाल और भ्रामक अंबार होता है, उसे सारणीयन के माध्यम से सरलतापूर्वक एक सुव्यवस्थित तथा तर्कसंगत रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है।
- एक बार जब डेटा को उपयुक्त रूप में व्यवस्थित कर लिया जाता है, तो यह स्थिति की जानकारी एक नजर में, या एक विहंगम दृष्टि के रूप में प्रदान करता है।

4.3 सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या –

1. महाविद्यालयीन बालक–बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

तालिका 4.1

बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के मध्यमान, मानक विचलन एवं t–परीक्षण का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	N	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	p- मूल्य	परिणाम
बालक विद्यार्थी	100	71.90	7.47	1.67	0.096	परिकल्पना स्वीकृत है।
बालिका विद्यार्थी	100	70.10	7.76			
कुल	**200**					

व्याख्या– उपरोक्त तालिका में बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। बालक विद्यार्थियों का मध्यमान 71.90 तथा मानक विचलन 7.47 प्राप्त हुआ, जबकि बालिका विद्यार्थियों का मध्यमान 70.10 तथा मानक विचलन 7.76 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि बालक विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार बालिका विद्यार्थियों की अपेक्षा सामान्य रूप से थोड़ा अधिक है। दोनों समूहों के मध्यमान में 1.80 अंकों का अंतर पाया गया, परंतु यह अंतर बहुत अधिक नहीं है।

इस अंतर की सार्थकता की जाँच हेतु स्वतंत्र नमूना ज–परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्राप्त t–मूल्य 1.67 तथा p–मूल्य 0.096 है। चूँकि p–मूल्य 0.05 के निर्धारित सार्थकता स्तर से अधिक है, इसलिए यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं माना जा सकता। इसका अर्थ है कि बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में पाया गया अंतर केवल संयोगवश हो सकता है और इसे वास्तविक या महत्वपूर्ण अंतर नहीं कहा जा सकता।

।अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूहों का सामाजिक व्यवहार लगभग समान स्तर का है।

आरेख 4.1– बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के प्राप्तांकों की तालिका (लिंग आधारित वितरण)

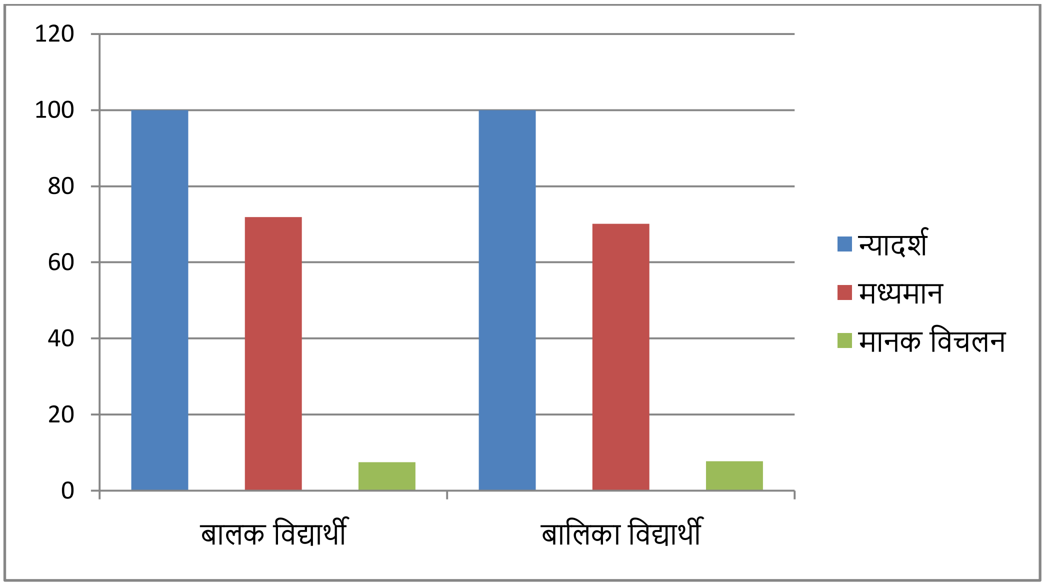

2. महाविद्यालयीन बालक–बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मिडिया के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

तालिका 4.2

महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	N	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य	p- मूल्य	परिणाम
बालक विद्यार्थी	100	69.59	7.40	0.989	0.324	परिकल्पना स्वीकृत है।
बालिका विद्यार्थी	100	68.49	8.30			
कुल	200					

व्याख्या– उपरोक्त तालिका में महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार बालक विद्यार्थियों का मध्यमान 69.59 तथा मानक विचलन 7.40 पाया गया, जबकि बालिका विद्यार्थियों का मध्यमान 68.49 तथा मानक विचलन 8.30 प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि बालक विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव बालिका विद्यार्थियों की तुलना में थोड़ा अधिक पाया गया है। तथापि दोनों समूहों के मध्यमान में केवल 1.10 अंकों का अंतर है, जो अपेक्षाकृत बहुत कम है।

इस अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता ज्ञात करने के लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Sample t-Test) का प्रयोग किया गया। विश्लेषण में प्राप्त t–मूल्य 0.989 तथा p–मूल्य 0.324 पाया गया। चूँकि p–मूल्य 0.05 के निर्धारित सार्थकता स्तर से अधिक है, इसलिए बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं माना जा सकता। इसका तात्पर्य यह है कि सोशल मीडिया के प्रभाव के संदर्भ में दोनों समूहों के अनुभव एवं प्रभाव स्तर लगभग समान हैं तथा प्राप्त अंतर केवल संयोगवश उत्पन्न हुआ माना जा सकता है।

अतः प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

आरेख 4.2– बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के पर सोशल मिडिया के प्रभाव के प्राप्तांकों की तालिका (लिंग आधारित वितरण)

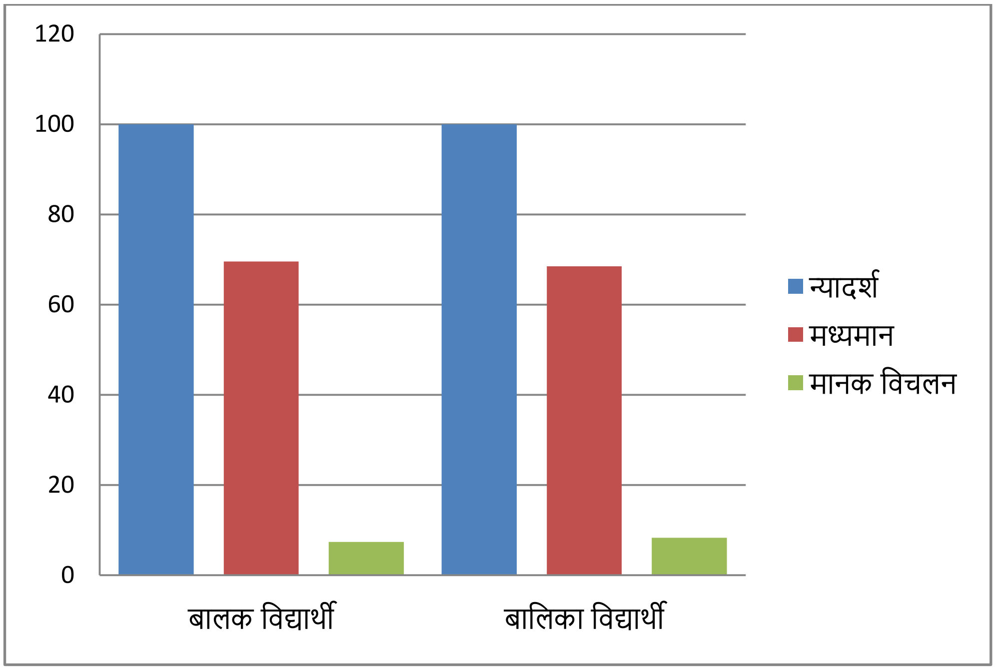

3. महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल मिडिया का प्रभाव पाया जायेगा।

तालिका 4.3

महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सामाजिक व्यवहार पर सोशल मिडिया का वर्णात्मक सांख्यकीय विश्लेषण

	N	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (SD)	परिणाम
सामाजिक व्यवहार	200	71.00	7.64	परिकल्पना स्वीकृत है।
सोशल मिडिया	200	66.45	3.91	
समूह	**200**	1.50	.501	

तालिका 4.4

महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, सोशल मीडिया के उपयोग एवं समूह के मध्य पीयरसन सह–संबंध गुणांक

N		सामाजिक व्यवहार	सोशल मिडिया	समूह
		200	**200**	**200**
समाजिक व्यवहार	पीयरसन सह–संबंध	1	.007	-.118
	Sig. (2-tailed)		.921	.096
सोशल मिडिया	पीयरसन सह–संबंध	.007	1	.067
	Sig. (2-tailed)	.921		.349
समूह	पीयरसन सह–संबंध	-.118	.067	1
	Sig. (2-tailed)	.096	.349	

व्याख्या– उपरोक्त तालिका मे महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों (कुल संख्या= 200) के सामाजिक व्यवहार और सोशल मीडिया के उपयोग के मध्य संबंधों का वर्णनात्मक एवं सह–संबंधात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। तालिका के वर्णनात्मक आँकड़ों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान 71.00 तथा मानक विचलन 7.64 है, जो विद्यार्थियों के सामाजिक दृष्टिकोण में सामान्य भिन्नता को दर्शाता है। वहीं, सोशल मीडिया के उपयोग का मध्यमान 66.45 और मानक विचलन 3.91 है। सोशल मीडिया के मानक विचलन का कम होना यह संकेत देता है कि अध्ययन में शामिल लगभग सभी विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग एक समान स्तर या सघनता से कर रहे हैं।

चरों के मध्य संबंधों को समझने के लिए किए गए पीयरसन सह–संबंध विश्लेषण के परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। तालिका के अनुसार, सामाजिक व्यवहार और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच सह–संबंध गुणांक (r) .007 पाया गया है, जिसका सार्थकता स्तर .921 है। चूंकि यह सार्थकता मूल्य (p-value) सांख्यिकीय मानक स्तर 0.05 से काफी अधिक है, अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक व्यवहार और सोशल मीडिया के उपयोग के मध्य कोई भी सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध नहीं है। यह परिणाम यह सिद्ध करता है कि सोशल मीडिया का अधिक या कम उपयोग करना विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं करता है और ये दोनों चर एक–दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र हैं।

इसके अतिरिक्त, जब सामाजिक व्यवहार का संबंध विद्यार्थियों के समूह (बालक/बालिका) से देखा गया, तो सह–संबंध मूल्य (r) –.118 प्राप्त हुआ, जिसका सार्थकता मूल्य .096 है। यह भी 0.05 स्तर पर असार्थक है, जो यह स्पष्ट करता है कि लिंग भेद (छात्र या छात्रा होने) के कारण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं आता है। इसी प्रकार, सोशल मीडिया के उपयोग और समूह के बीच भी सह–संबंध (r =.067, p = .349) असार्थक पाया गया है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि बालक और बालिका दोनों ही श्रेणियों के विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग समान रूप से कर रहे हैं और उनके उपयोग के पैटर्न में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। समग्र रूप से, यह विश्लेषण दर्शाता है कि वर्तमान दौर में महाविद्यालयीन युवाओं का सोशल मीडिया व्यवहार और उनका वास्तविक सामाजिक व्यवहार दो अलग–अलग आयाम हैं, जिनका आपस में कोई सीधा सह–संबंध नहीं है।

आरेख 4.3—महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सामाजिक व्यवहार पर सोशल मिडिया के प्राप्तांकों की तालिका

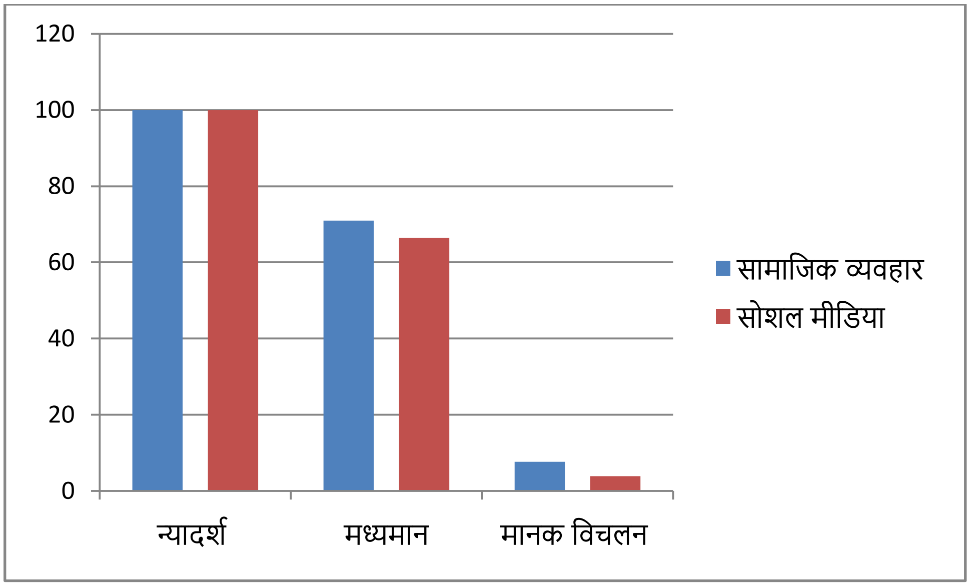

4.5 परिकल्पना का प्रमाणीकरण एवं परिणाम –

प्रस्तुत अध्ययन में महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन में विभिन्न प्रश्नों (Q1 से Q6) के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया। प्राप्त आँकड़ों एवं सांख्यिकीय परीक्षणों के आधार पर परिकल्पनाओं की पुष्टि निम्न प्रकार से की गई है।

1. **प्रथम परिकल्पना**– प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत निर्मित मुख्य वैकल्पिक परिकल्पना ''महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अंतर पाया जाएगा।'' सांख्यिकीय विश्लेषण के अंतर्गत स्वतंत्र नमूना t–परीक्षण के परिणाम दर्शाते हैं कि बालक विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का मध्यमान (M =71.90, SD=7.47) और बालिका विद्यार्थियों का मध्यमान (M = 70.10, SD =7.76) है। दोनों समूहों के मध्यमानों में 1.80 अंकों का अंतर है। इस अंतर की सार्थकता की जांच करने पर प्राप्त t–मूल्य 1.67 है तथा इसका p–मूल्य 0.096 पाया गया है।

चूंकि प्राप्त p–मूल्य (0.096), सांख्यिकीय सार्थकता के निर्धारित न्यूनतम मानक स्तर 0.05 से अधिक ($p > 0.05$) है, इसलिए यह मध्यमान अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है। यह परिणाम सिद्ध करता है कि दोनों समूहों में दिखने वाला आंशिक अंतर केवल प्रतिदर्श त्रुटिया संयोगवश है, वास्तविक नहीं है।

अतः परिकल्पना 1 स्वीकृत की जाती है।

2. **द्वितीय परिकल्पना** – प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत निर्मित मुख्य वैकल्पिक परिकल्पना ''महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया जाएगा'' के सांख्यिकीय प्रमाणीकरण हेतु स्वतंत्र नमूना t–परीक्षण का उपयोग किया गया। विश्लेषण के परिणाम दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया के प्रभाव के संदर्भ में बालक विद्यार्थियों का मध्यमान 69. 59 (SD =7.40) तथा बालिका विद्यार्थियों का मध्यमान 68.49 (SD =8.30) प्राप्त हुआ है। यद्यपि दोनों समूहों के मध्यमानों में 1.10 अंकों का आंशिक अंतर देखा गया, किंतु इस अंतर की सांख्यिकीय वैधता की जांच करने पर प्राप्त t–मूल्य 0.989 और p–मूल्य 0.324 पाया गया। चूंकि यह p–मूल्य निर्धारित सांख्यिकीय सार्थकता स्तर 0.05 से काफी अधिक ($p > 0.05$) है, इसलिए यह

प्रमाणित होता है कि दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है और यह केवल प्रतिदर्श चयन के संयोग के कारण हो सकता है। अतः इस सांख्यिकीय साक्ष्य के आधार पर पूर्व निर्मित शोध परिकल्पना को पूर्णतः अस्वीकृत किया जाता है तथा इसके विपरीत शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) को स्वीकार किया जाता है कि दोनों समूहों पर सोशल मीडिया का प्रभाव समान है।

अतः परिकल्पना .2 स्वीकृत की जाती है।

3. तृतीय परिकल्पना– प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत निर्मित मुख्य वैकल्पिक परिकल्पना ‘‘महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार और सोशल मीडिया के उपयोग के मध्य सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध पाया जाएगा‘‘ के प्रमाणीकरण हेतु पीयरसन सह–संबंध विश्लेषण का प्रयोग किया गया। विश्लेषण के परिणाम दर्शाते हैं कि सामाजिक व्यवहार और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच सह–संबंध गुणांक (r) .007 प्राप्त हुआ है, जिसका सार्थकता स्तर (p-value) . 921 है। चूंकि यह सार्थकता मूल्य निर्धारित सांख्यिकीय मानक स्तर 0.05 से अत्यधिक ऊपर (p>0. 05) है, इसलिए यह प्रमाणित होता है कि दोनों चरों के मध्य पाया गया धनात्मक संबंध सांख्यिकीय रूप से पूरी तरह से असार्थक है। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के समूह (लिंग) का सामाजिक व्यवहार (r =–.118, p =.096) और सोशल मीडिया उपयोग (r =.067,p =.349) के साथ भी संबंध असार्थक पाया गया है। अतः इन पुख्ता सांख्यिकीय साक्ष्यों के आधार पर मुख्य शोध परिकल्पना को पूर्णतः अस्वीकृत किया जाता है तथा इसके विपरीत निर्मित शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है कि विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।

अतः परिकल्पना 3 स्वीकृत की जाती है।

इस प्रकार अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि सोशल मीडिया वर्तमान समय में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, संवाद शैली, मित्रता संबंधों तथा अध्ययन संबंधी गतिविधियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है।

अध्याय पंचम

सारांश, परिणाम एवं सुझाव

5.0 प्रस्तावना – सारांश में एक संक्षिप्त परिचय और समस्या का विवरण शामिल हो सकता है। इसके बाद उद्देश्यों का विवरण, परिकल्पनाओं (Hypothese) की सूची, और उपयोग की गई कार्यप्रणाली का वर्णन हो सकता हैय जिसमें अवलोकन की विभिन्न इकाइयाँ, अलग–अलग उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके एकत्र किए गए डेटा का प्रकार, और डेटा का विश्लेषण शामिल होता है। इसके बाद मुख्य निष्कर्ष, परिणाम और निहितार्थ बताए जा सकते हैं। सारांश में सभी प्रारंभिक सामग्री, रिपोर्ट का संक्षिप्त मुख्य भाग, और रिसर्च के निष्कर्षों के विस्तृत निहितार्थ शामिल होते हैं। इस लिहाज से, सारांश रिसर्च रिपोर्टिंग को साझा करने का उद्देश्य पूरा करता है, जबकि मुख्य रिपोर्ट सभी अकादमिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यह एक सारांश है। इसलिए, इसमें रिसर्च के पीछे के तर्क के बजाय उसके परिणामों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है।

5.1 सारांश – इस शोध अध्ययन मे, अधिकांश महाविद्यालयीन विद्यार्थी इस बात से सहमत थे कि सोशल मीडिया पढ़ाई में उपयोगी है, क्योंकि यह बिना किसी देरी के, केवल एक क्लिक पर अधिकांश जानकारी उपलब्ध करा देता है। सोशल मीडिया का पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह कई प्रकार की जानकारी, पहले से किए गए शोधों और आने वाली तकनीकों के बारे में जानने में सहायक है। साथ ही साथ, सोशल मीडिया के माध्यम से किसी भी जानकारी को उन लोगों के साथ साझा करना बहुत आसान हो जाता है, जो उस व्यक्ति से सोशल मीडिया पर जुड़े हुए हैं। अतः सोशल मीडिया से जुड़े निजिता संबंधी मुद्दे भी मौजूद हैं। सोशल मीडिया की कई कमियां भी हैं, लेकिन कई मायनों में यह छात्रों के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह शिक्षा प्रदान करता है, दूसरों के साथ जुड़ाव स्थापित करता है, ढेर सारी जानकारी उपलब्ध कराता है, और उन्हें विभिन्न अपडेट्स, नवाचारों तथा अन्य चीजों से अवगत कराता है। वर्तमान में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के जीवन पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इसलिए आधुनिक दुनिया मे महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए सोशल मीडिया अत्यंत आवश्यक है।

5.3 परिणाम –

''प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि सोशल मीडिया एक दोधारी तलवार की तरह है। जहाँ यह महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर जोड़ता है, वहीं अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग उनके पारंपरिक सामाजिक कौशल और व्यवहारिक मूल्यों को प्रभावित कर रहा है।'' अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण और परिकल्पना परीक्षण के आधार पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं–

1. लिंग के आधार पर महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के वास्तविक सामाजिक व्यवहार मे समानता का कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण या सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. बालक और बालिकाओ दोनों ही समाज में लगभग एक समान सामाजिक व्यवहार और दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं। लिंग भेद का उनके सामाजिक व्यवहार के स्तर पर कोई प्रभावी प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. अध्ययन के लिए निर्मित मुख्य परिकल्पना सांख्यिकीय कसौटी पर खरी नहीं उतरी, जिसके कारण यह प्रमाणित होता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे युवाओं में सामाजिक व्यवहार का विकास लिंग–तटस्थ होकर समान रूप से हो रहा है।
4. महाविद्यालयीन बालक एवं बालिका विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव सांख्यिकीय दृष्टिकोण से पूरी तरह समान पाया गया है, जिससे यह सिद्ध होता है कि डिजिटल युग में सोशल मीडिया का प्रभाव लिंग के आधार पर भिन्न नहीं होता है।
5. उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र और छात्राएं दोनों ही समान रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का उपयोग कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और दैनिक जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव भी एक ही स्तर का परिलक्षित हो रहा है।
6. इस विश्लेषण से यह स्पष्ट परिणाम निकलता है कि सोशल मीडिया के प्रभाव और उससे उत्पन्न होने वाले अनुभवों को निर्धारित करने में विद्यार्थियों का लिंग (बालक या बालिका होना) कोई निर्णायक या महत्वपूर्ण साबित नहीं हुआ है।
7. महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के वास्तविक सामाजिक व्यवहार और उनके सोशल मीडिया के उपयोग के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है, जिससे यह सिद्ध होता है कि ये दोनों चर एक–दूसरे से स्वतंत्र आयाम हैं।

5.4 निष्कर्ष– अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है सोशल मीडिया की लत वाले छात्रों की बातचीत करने की क्षमता कम हो जाती है। छात्र जितना ज्यादा समय अपने मोबाइल फोन पर सोशल मीडिया से चिपके रहते हैं, उतना ही कम समय वे लोगों से आमने–सामने मिलने और उनके साथ घुलने–मिलने में बिताते हैं। आजकल सोशल मीडिया सभी लोगों के लिए बातचीत करने का एक बहुत ही सुविधाजनक और जरूरी जरिया बन गया है। हम इसका इस्तेमाल नए दोस्त बनाने और अलग–अलग देशों में रहने वाले दोस्तों से संपर्क बनाए रखने के लिए कर सकते हैं। हम अपने विचार भी बहुत तेजी से शेयर कर सकते हैं, जिससे चीजें बहुत तेजी से आगे बढ़ सकती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि लोग हमें अपने विचार बता सकते हैं और हम तुरंत उनमें सुधार कर सकते हैं। सोशल मीडिया इस्तेमाल करने के और भी कई फायदे हैं, लेकिन हर चीज के हमेशा कुछ फायदे और कुछ नुकसान होते हैं। चूंकि सोशल मीडिया लोगों के लिए इतना ज़्यादा सुविधाजनक है कि उनमें से ज्यादातर लोगों को अब दूसरों से बातचीत करने के लिए 'बोलने' की भी जरूरत नहीं पड़ती। अतः सोशल मीडिया का महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। संतुलित उपयोग सामाजिक विकास में सहायक है, जबकि अत्यधिक उपयोग सामाजिक व्यवहार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

5.5 सुझाव – इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि ज्यादातर मामलों में सोशल मीडिया का छात्रों के जीवन पर कोई खास नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः कुछ सुझाव निम्न हैं।

1. अगर छात्रों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है, तो इससे एक स्वस्थ जीवन शैली बनेगी, जो सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बना और प्रभावित कर सकती है। इससे सीखने की प्रक्रिया और उसका अर्थ भी स्पष्ट होगा।

2. इस अध्ययन में यह भी सुझाव दिया गया कि छात्रों को सोशल मीडिया का इस्तेमाल जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि वे आपस में सामाजिक मुद्दों पर चर्चा कर सकें और खास मुद्दों पर मिलकर काम करने के लिए सामाजिक समूह बना सकें।

3. सोशल मीडिया का इस्तेमाल इस तरह से किया जाना चाहिए कि यह छात्रों की पढ़ाई या सामाजिक जीवन में कभी भी रुकावट न डाले। जवाब देने वालों में से सिर्फ 32 : लोग ही

सोशल मीडिया का इस्तेमाल करके कोई बिजनेस या कमाई करने वाली दूसरी गतिविधियाँ चलाते हैं।

4. अगर ज्यादा से ज्यादा छात्र बिजनेस करना शुरू कर दें, तो वे सोशल मीडिया पर बिताए गए अपने समय का सही इस्तेमाल कर सकते हैं और निश्चित रूप से कुछ ऐसे व्यावहारिक बिजनेस कौशल सीख सकते हैं जो आखिरकार उनकी सीखने की गति और विकास को तेज करेंगे। लेकिन पढ़ाई–लिखाई को सबसे ज्यादा प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि वे जीवन में पीछे न रह जाएँ।

5. शोध में यह देखा जा सकता है कि दूसरे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के मुकाबले WhatsApp और Facebook इतने लोकप्रिय हो गए हैं। इन दोनों सोशल नेटवर्किंग साइट्स का इस्तेमाल बहुत ज्यादा होता है, इसलिए यह जानना दिलचस्प होगा कि लोग इनका इतनी बार इस्तेमाल क्यों करते हैं। जैसे–जैसे ये वेबसाइट्स और लोकप्रिय होती जाएँगी, इस मुद्दे पर जाँच करना फायदेमंद होगा।

6. सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स के इस्तेमाल और लिंग (पुरुष/महिला) के बारे में और अध्ययन की जरूरत है, ताकि इन साइट्स का इस्तेमाल करने वाले पुरुषों और महिलाओं पर पड़ने वाले असर को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

7. सोशल मीडिया की लत वाले छात्रों के बातचीत करने के कौशल में कमी आती है। छात्र जितना ज्यादा समय अपने मोबाइल फोन पर सोशल मीडिया से चिपके रहते हैं, अतः वो कुछ समय वे लोगों से आमने–सामने मिलकर बातचीत करने में बिताये हैं।

8. सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने के और भी कई फायदे हैं, लेकिन किसी भी चीज के हमेशा कुछ फायदे और कुछ नुकसान होते हैं। अतः सोशल मीडिया का इस्तेमाल अत्यधिक सावधानी से करना चहिए ।

9. सोशल मीडिया का महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इसलिए सोशल मीडिया संतुलित उपयोग सामाजिक विकास में सहायक है, जबकि अत्यधिक उपयोग सामाजिक व्यवहार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अतः उससे बचे।

5.6 अनुकरणीय अध्ययन— शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन सीमित समय अंतराल के कारण लघु न्यादर्श पर किया गया है अतः यह अध्ययन विस्तृत न्यादर्श पर किया जा सकता है एवं परिणामों की जांच की जा सकती कुछ प्रमुख अध्ययन इस प्रकार हैं—

1. सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के वास्तविक संवाद में दूरी पर प्रभाव का अध्ययन ।

2. सोशल मीडिया के उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक अलगाव और अत्यधिक उपयोग पर प्रभाव का अध्ययन ।

3 सोशल मीडिया उपयोग से महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के फोमो और सामाजिक चिंता पर प्रभाव का अध्ययन ।

4 सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के वास्तविक संबंधों बनाम ऑनलाइन प्राथमिकता पर प्रभाव का अध्ययन ।

5 सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के स्क्रीन टाइम और व्यवहार में बदलाव पर प्रभाव का अध्ययन ।

6. सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों मे एडिक्शन और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन ।

7. सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों मे तुलनात्मक हीन भावना का प्रभाव का अध्ययन ।

8 सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के पारिवारिक बातचीत में कमी पर प्रभाव का अध्ययन ।

9.सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के वास्तविक संवाद में दूरी पर प्रभाव का अध्ययन ।

10. सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों मे डिप्रेशन पर प्रभाव का अध्ययन ।

प्रश्नावली

”सोशल मीडिया उपयोग का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव“

लिकर्ट 5–बिंदु स्केल आधारित प्रश्नावली

शोध निर्देशक	शोधकर्ता
डॉ. गुंजन शर्मा	प्रियंका यादव
सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा विभाग)	एम. एड. (प्रशिक्षार्थी)
प्रगति महाविद्यालय	प्रगति महाविद्यालय
चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)	चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

निर्देश –कृपया प्रत्येक कथन पर अपनी सहमति के अनुसार एक विकल्प चुने ।

यह प्रश्नावली महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए तैयार की गई है। नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। कृपया प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी वास्तविक राय के अनुसार दिए गए 5 विकल्पों में से किसी एक पर सही (✓) का निशान लगाएं। इसमें कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है, आपकी व्यक्तिगत राय ही महत्वपूर्ण है। आपके द्वारा दी गई सभी जानकारी पूर्णतः गुप्त (ब्वदपिकमदजपंस) रखी जाएगी और इसका उपयोग केवल शैक्षणिक अनुसंधान के लिए ही किया जाएगा। कृपया किसी भी कथन को बिना टिक किए न छोड़ें। सभी 20 प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

सामान्य जानकारी (General Information)–

विद्यार्थी का नाम –...

महाविद्यालयीन का नाम –...

लिंगः– .... कक्षाः – ....

संकाय– ....

महाविद्यालय का क्षेत्रः – ग्रामीण .... /शहरी ....

महाविद्यालय का प्रकारः – सरकारी............... ../ निजी.........................

क.	प्रश्नावली (20 आइटम)	पूर्णतःसहमत 5	सहमत 4	अनिश्चित 3	असहमत 2	पूर्णतःअसहमत 1
1.	सोशल मीडिया के उपयोग से मेरे मित्रों के साथ संबंध मजबूत हुए हैं।					
2.	प्रतिदिन सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत करता करती हूँ।					
3.	सोशल मीडिया ने मेरी संवाद क्षमता में सुधार किया है।					
4.	सोशल मीडिया के कारण आमने–सामने बातचीत कम हो गई है।					
5.	मैं सामाजिक मुद्दों की जानकारी सोशल मीडिया से प्राप्त करता करती हूँ।					
6.	सोशल मीडिया के उपयोग से मेरे अध्ययन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।					
7.	सोशल मीडिया मुझे नए लोगों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।					
8.	सोशल मीडिया के कारण मैं परिवार के साथ कम समय बिताता बिताती हूँ।					
9.	सोशल मीडिया मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक है।					
10.	सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय रहने से मेरी दिनचर्या प्रभावित होती है।					
11.	मैं अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करता करती हूँ।					

12.	सोशल मीडिया के कारण विद्यार्थियों में सामाजिक तुलना की प्रवृत्ति बढ़ती है।					
13.	सोशल मीडिया समूह कार्य एवं शैक्षणिक सहयोग में सहायक है।					
14.	सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से तनाव या चिंता महसूस होती है।					
15.	सोशल मीडिया ने मेरी सामाजिक जागरूकता बढ़ाई है।					
16.	सोशल मीडिया के कारण वास्तविक सामाजिक मेल जोल में कमी आई है।					
17.	मैं महत्वपूर्ण सूचनाएँ एवं समाचार सोशल मीडिया से प्राप्त करता करती हूँ।					
18.	सोशल मीडिया का उपयोग मेरे व्यवहार एवं जीवनशैली को प्रभावित करता है।					
19.	सोशल मीडिया के माध्यम से मैं स्वयं को समाज से अधिक जुड़ा हुआ महसूस करता /करती हूँ।					
20.	सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से समय प्रबंधन में कठिनाई होती है।					